ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

प्रभा खेतान के उपन्यास में नारी मनोविज्ञान: एक समीक्षा

डॉ. रंजीत कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
एल.आर.डी.ई, डी.आर.डी.ओ, बेंगलूरु
Dr. Ranjeet Kumar, Senior Translatio Officer
LRDE, DRDO, Bengaluru
ranjeetk550@gmail.com

सारांश - समकालीन साहित्य में नारी स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है और नारी की नई भूमिकाओं को पारिभाषित करने का एक शक्त माध्यम रहा है। यह नई सदी में नारी की आवाज को संसद से सड़क तक और परिवार के चाहरदिवारी से विश्व भर में पहुँचाने का सशक्त एवं शक्तिशाली साधन साबित हुआ है। प्रत्यके वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन भी इसका प्रतीक है। नारी विमर्श के माध्यम से महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के बल पर इस अभियान एवं आंदोलन का उड़ान भरने के लिए दमदार पंख दिया है। जो आज के नारी की सामाजिक स्थिति एवं आर्थिक स्थिति में बदलाव में महती योगदान प्राप्त हुआ है। नारी जीवन के मूल्यवान क्षणों में परिवार, समाज एवं दिश हित में अपने को समर्पित रखती है। स्त्री विमर्श में पुरुष लेखक कितनी भी संवेदनशीलता दिखाये, वह स्त्री का मार्मिक वृतांत नहीं लिख सकता। नारी के पक्ष में लेखन आदर्शवाद है जबकि अपने पक्ष में नारी का लेखन उसकी यथार्थवाद है। आदर्शके तुलना में यथार्थ की जड़ें हमेंशा काफी मजबुत होती है। इसलिए नारी लेखन सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी।

मनुष्य एक सामाजिक एवं संवेदनशील प्राणी है। वे अपनी भावनाओं, विचारों एवं लालसाओं को दूसरों तक पहूँचाने का सार्थक प्रयास करते हैं। साहित्यकार भी एक संवेदनशील मनुष्य होता है जो मानवीय भावनाओं, चेतनाओं, विकारों, विद्रुपताओं और समस्याओं का उदघाटन अपने साहित्यों के माध्यम से करते हैं। उनकी साहित्यिक सृजनशीलता, कलात्मकता एवं संवेदनशीलता ही उनकी साहित्यिक विधा की कसौटी होती है। हमारा इंद्रियबोध, भावबोध, और विचारबोध अभिव्यक्ति के जिन विविध रूपों को जन्म देता है, उनमें एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विधा है- उपन्यास। अन्य साहित्यिक विधाओं की भाँति उपन्यास भी हमारी उस अनुभूति-प्रवणता को, जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता रखती है और जिसे संवेदना नाम से अभिहित किया जाता है। समकालीन

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के नारी के विभिन्न भावनाओं, चेतनाओं, विचारों, कठिनाइयों को उजागर किया है जो वास्तविक रूप में नारी मनोविज्ञान के विभिन्न तत्व माने जाते है।

प्रस्तावना - वर्तमान समय में अधिकांश महिला उपन्यासकारों ने सामाजिक विद्रुपताएं, नारी शोषण एवं नारी की अनेक समस्याओं का पर्दाफाश अपने उपन्यास के माध्यम से किया है। यथार्थ भी यही है कि नारी आर्थिक समस्याओं एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जुझ रही हैं। आजादी के 72 वर्ष बाद भी आज के युग की नारी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नही कर पाई हैं। यह कटु सत्य है कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीति स्वतंत्रता का कोई खास मूल्य नहीं रह पाता है। नारी जीवन की व्यथा, पीड़ा एवं संघर्ष की दस्तानें मनोवैज्ञानिक परिपेक्ष्य के परिधि में समेटती है। हालांकि नारी मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विस्तृत है। उपन्यासकार के व्यक्तित्व में समाहित सारी पारंपरिक और नवीन चेतनाएँ उसके सृजन में प्रतिबिंबित हो उठती है। युगीन चेतना समाज के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करनेवाली वह शक्तिशाली धारा है, जो हर सच्चे साहित्यकार की कृति में आकार ग्रहण करती है।

डॉ. रामदरश मिश्र का कथन है कि, '' साहित्य का मूल संबंध मानव की संवेदना से है। बिना संवेदना के साहित्य नहीं बनता। बुद्धि, दर्शन, चिंतन, ज्ञान, विज्ञान सबको सबसे पहले जीवन में आत्मसात करना पड़ता है। आत्मसात् होकर मानव संवेदना का अंग बनना पड़ता है, तभी शक्तिशाली साहित्य की सृष्टि होती है। साहित्य सृष्टिएक जटिल प्रक्रियाहै, जिसमें सौंदर्य चेतना, और संवेदनाओं में युग-परिस्थितियों और जीवन दर्शन के कारण नई छायाएँ उगती रहती है, किंतु कुल मिलाकर मानव संवेदना और सौंदर्य भावना मानव की सबसे आदिम संपत्ति हैं।''

आज पुरुत्थानवादी शक्तियां भारतीय समाज में बड़े ठस्से के साथ घूम रही है। नारी के जीवन में अनुभूत होनेवाली चेतना, संवेदना, मनोभावना, आंतरिक पीड़ा, मानसिक यातना इत्यादि नारी मनोविज्ञान क्षेत्र के परिधि में आता है। इसके अलावा इसके अंतगर्त हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, यौन कुंठा एवं यौन शोषण का विस्तृत क्षेत्र भी समाहित है। सांसारिक जीवन में, महिला उपन्यासकारों ने नारी मनोविज्ञान के संबंध अनेक विधाओं में

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

लेखनी चलाई है जिसमें कहानी एवं उपन्यास प्रमुख है। दिनेश नंदिनी डालमिया, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, दिप्ती खंडेवाल, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, कांताभारती मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मृदुला सिन्हा, चंद्रकातां, कुसुम कुमार, ममता कालिया, महरुन्निसा परवेज , चित्रा मुदगल, सूर्यवाला, मृणाल पांडे, नासिरा शर्मा, निरुपमा सोबती आदि महिला कथाकारों ने समाकालीन उपन्यास लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इनके अतिरिक्त पिछले कुछ दशकों में इस क्षेत्र में अन्य लेखिकाओं ने समकालीन उपन्यास के संवर्द्धन महत्वपूर्ण योगदान प्रदान की है जिसमें नारी समस्या एवं नारी विमर्श को प्रमुखता प्रदान की गई है। इनके उपन्यासों में नारी –चेतना एवं संवेदना को प्रमुखता से बल दिए हैं। महिला उपन्यासकारों ने नारी के भावनाओं एवं आकाक्षाओं का विषद विवरण उनके रचनाओं के द्वारा उद्घाटित की गई है जो बहुत ही सराहनीय एवं प्रशंसनीय कदम सिद्ध हुआ है। खास तौर पर हिंदी की प्राय: सभी महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन के सुख-दुख, आशा-निराशा, हर्ष एवं विषाद की अनुभूति के नाना भाव-भीने चित्र उकेरने में सिद्धस्त हैं। उनके उपन्यासों में अनुभूति की गाढ़ा रंग विद्यमान है। अपने उपन्यासों में नारी जीवन की त्रासदी को एक संवेदनशील नारी की दृष्टि से देखा है।

इसी क्रम में हिंदी साहित्य की महान लेखिका प्रभा खेतान का नाम बहुत ही श्रद्धा एवं सम्मान से लिया जाता है। सीमोन द बोउआर की विश्वप्र सिद्ध पुस्तक ' दी सकेंड सेक्स' का हिंदी रूपांतर प्रस्तुत करके उन्होंने काफी ख्याति अर्जित की है। उन्होंने हिंदी साहित्य जगत को अनेक महत्वपूर्ण उपन्यास दिये हैं जो हैं- – ' आओ पेपे घर चलें' 1990 में, 'तालाबंदी' 1991 में छिन्नमस्ता 1993 में ' अपने-अपने चेहरे 1994 में, 'पीली आंधी 1996 में प्रकाशित हुई है।

प्रभा खेतान की एक महत्वपूर्ण उपन्यास छिन्नमिस्ता हें । ' छिन्नमिस्ता' की प्रमुख नारी पात्र प्रिया' है। इस उपन्यास में एक ऐसी नारी की जीवन –संघर्ष गाथा है, जो पुरुष-प्रधान समाज में पुरुषों के वर्चस्व के विरूद्ध अपनी अलग पहचान और जमीन बनाना चाहती है। खास तौर पर पुरुष प्रधान समाज ने नारी को अर्थ एवं यौन दोनो स्तरों पर शोषण किया जाता रहा है। छिन्नमिस्ता की कथा –नायिका प्रिया इन दोनों मोर्चों पर उसके शोषण से मुक्त होना चाहती है। वह किसी भी स्थिति में पुरुष का गुलाम बनकर नहीं रहना चाहती। वह स्वयं आत्मनिर्भर बनना चाहती है। सामाजिक समस्याओं का सामना

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

करने के लिए संघर्ष करने के लिए तैयार रहती है। प्रिया सिद्धांतत: अपने जीवन के बारे में निर्णय का अधिकार दूसरे को देना पसंद नहीं करती है। प्रिया के पास व्यवहारिक स्तर पर सामाजिक समस्याओं को हल करने का कोई खास योजना नहीं है जिसे वह साकार रूप दे सके। यहाँ लेखिका ने नारी मनोविज्ञान के सूक्ष्म अुनभव को दिखाने का सार्थक प्रयास की है।

प्रभा खेतान की एक दूसरी उपन्यास ' **अपने-अपने चेहरे'** में एक समृद्ध मारवाड़ी की अंतरंग कथा के माध्यम से नारी जीवन की त्रासदी की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। अमीर, खुशहाल एवं सभ्रांत परिवार में भी नारी की स्थिति दयनीय एवं चिंतनीय रहती है। अपने-अपने उपन्यास का मुख्य पात्र राजेंद्र गोयनका है जिसकी पत्नी फूहड़ एवं गँवार है। उनकी पत्नी उन्हें मोहित एवं आकर्षित नहीं कर पाती है। इसलिए उनका दांपत्य जीवन मात्र सामाजिक मर्यादा तक ही सीमित है। राजेंद्र गोयनका के जिंदगी में एक सुशिक्षित और संभ्रांत आधुनिक महिला रमा की भूमिका महत्वपूर्ण है। वह राजेंद्र गोयनका के उद्योग धंधा को सँभालने के साथ ही उनकी सभी भावनाओं को भी तुष्ट करती है। इस उपन्यास में फिर भी दोनो नारी पात्र अपनी-अपनी समस्याओं के भंवर में फंसी हुई रहती है। बिडंबना यह है कि रमा और उनकी पत्नी दोनों सुखी नहीं हैं। इसमें एक स्तर पर दोनों अपने को उपेक्षित अनुभव करती है। पत्नी की सामाजिक पहचान होती है, किंतु गोयनका जी के हृदय में अपनी पत्नी के लिए जगह नहीं हैं। वह घर की उपेक्षित वस्तु के समान समझी जाती है। रमा को वे दिल से चाहते हैं, किंतु समाज में उसे कोई मर्यादित पहचान नहीं दे पाते हैं। रमा का दर्द है- '' मेरा परिचय क्या है इस उम्र में ? किसकी पत्नी किसकी माँ ? मैं न सधवा न विधवा । अपनी ही तस्वीर इतनी धुँधली क्यों लगती है ?'' आज की सुशिक्षित , विवाहिता भी उपेक्षित एवं शोषण के लिए मजबुर हो जाती हैं। आज के युग प्रत्येक नारीअपनी पहचान की तलाश करती है साथ ही उसे सामाजिक पहचान भी मिले। राजेंद्र गोयनका जी की बेटी 'रीतु' दिल्ली के एक उद्योगपति के बेटे से ब्याही गई है । वह सुंदर, सुशिक्षित एवं सर्वगुण संपन्न होने के बावजुद भी वह अपने ससुराल में शोषित होती रहती है। उसकी शादी के कुछ दिन के बाद ही उसके पति का संबंध एक अन्य युवती से हो जाता है। वह अपमानित होकर अपने पिता के घर वापस आ जाती है। गोयनका साहब इस सदमें को सामना नहीं कर पाते हैं। परिणामस्वरूप उनकी असामयिक मृत्यु हो जाती है। घर में संकट विकराल रूप धारण कर लेता है तो इस विषम परिस्थिति में 'रमा' रितु को सहारा देतीहै और अपने साथ रखती है। इस प्रकार इस उपन्यास में माध्यम से प्रभा खेतान ने नारी मनोविज्ञान को उद्घाटित करने में सफल रहीं है। लेखिका ने इस शोषण के विरुद्ध आवाज दी है जो स्त्री विर्मश का केंद्र बिंदु

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

है। आज का युगीन यथार्थ भी यही है कि ज्यों-ज्यों आदमी के पास भौतिक सुख सुविधा बढ रही है त्यों-त्यों उसके मन का सुख उसकी आत्मा की शांति विलीन होती जा रही है। आदमी की यही उदासी, उब, अकेलापन और घुटन संवेदनशील कथा लेखिका प्रभा खेतान के उपन्यासों में बडी भावप्रवण शैली में व्यक्त हुई है।

आज नारी नाना मोड़ और अवरोधों से भी ग्रीष्म के उत्ताप से दहकती अपनी जीवन-यात्रा में यायावरी श्रम के परिहार के लिए वह जिस वट वृक्ष तले पल-दो पल सुस्ताता है, उसमें अधिकाधिक सुख-लाभ पा लेना चाहता है। तथा इस प्रकार की समस्याओं एवं कठिनाइयों को मानवीय संवेदना एवं नारी मनोविज्ञान के माध्यम से अभिव्यक्त करना महिला साहित्यकारों का भी मूल ध्येय रहा है। इसकी अभिव्यक्ति उपन्यास में बहुत ही विस्तृत एवं व्यापक हुआ है। प्रतिभाशाली उपन्यासकार अपनी नवोन्मेषशालिनी उर्जा, इतिहासबोध, सांस्कृतिक ज्ञान की विरासत और समसामयिक यथार्थ को पकडने के कौशल से अपनी रचना को कालजयी बना देता है। प्रभा खेतान नारी समस्याओं के माध्यम से नारी विमर्श को प्रभावशाली ढंग से आम जनता तक लाने की कोशीश की है क्योंकि वर्तमान सामाजिक परिवेश में नारी विमर्श कर अहमियत दी जाने लगी है क्योंकि देश के विकास में आधुनिक, परिश्रमी एवं शिक्षित नारियों ने अप्रतिम सहयोग दिया है।

संदर्भिकायें-

1. **हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएं – डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र, अमन प्रकाशन कानपुर, 2015**
2. **औरत कल, आज और कल-आशारानी व्होरा, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली , 2011**
3. **हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोक भारती प्रकाशन , इलाहाबाद-01 2011**
4. **हिंदी उपन्यास- डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010**
5. **हिंदी उपन्यास का नया दौर – सं डॉ. राजेंद्र कुमार सेन, लोकगीत प्रकाशन चंडीगढ़, 2011**
6. **हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र एवं डॉ. हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2009**
7. **हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 4 July 2020

8. हिंदी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना- डॉ. उषा यादव

Copyright @ 2020 Authors